Academe *Journal of Education & Psychology*
Volume-13, Issue-2, Year-2023 (July-December) *Impact Factor: 5.02*
PP: 70-74 *ISSN No: 2249-040X*

भूमंडलीकरण और हिंदी

निशा कुमारी

(**शोधार्थी**)

हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर दरभंगा

शोध-सारः-

भूमंडलीकरण व्यापार विषयक नियमों को वैश्विक रुप से ले जाने वाली एक प्रक्रिया है जो पूरे विश्व के लोगों को, कंपनी राष्ट्रीय की सरकार को एक ही व्यापार में बांधने का काम करती है। यह उत्पाद, विचार, दृष्टिकोण तथा अन्य सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक आयाम का एक साझा मंच है। यह पूरे विश्व को एक गांव में परिवर्तित कर 'वसुधैव कुटुंबकम' का सपने दिखा रहा है, लेकिन यह भ्रम है। भूमंडलीकरण ने संपूर्ण विश्व को बाजारवाद में परिणत कर उपभोक्ता वर्ग को प्रभावित किया है। उपभोक्ता वर्ग बाजारवाद की चकाचौंध से पूरी तरह प्रभावित हो विज्ञापन की दुनिया से जकरा हुआ है। बाजारवाद के इस दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा व्यापारियों ने हिंदी भाषा को अपनाकर अपने व्यापार का प्रचार- प्रसार करते हैं, जिससे हिंदी भाषा का तेजी से विस्तार हुआ है। मीडिया, विज्ञापन, इंटरनेट, टीवी चैनल, मनोरंजन जगत,पत्र-पत्रिकाएं आदि कई क्षेत्रों में हिंदी का काफी तेजी से विस्तार हुआ है। हिंदी भाषा अपने दम पर भारत के साथ अन्य देशों में भी उपलब्धियां हासिल की हैं। हिंदी अपनी शक्ति और ऊर्जा तथा सूचना प्रौद्योगिकी से उपलब्ध नये यांत्रिक उपकरणों के साथ अपना साम्राज्य स्थापित करते हुए विश्व मंच पर भारत का गौरव बढ़ा रही है। विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, कंप्यूटरीकरण, व्यावसायिक क्षेत्र, विज्ञापन आदि क्षेत्रों में हिंदी भाषा का विकास तेजी से हो रहा है।

कूट शब्द :- भूमंडलीकरण, ग्लोबलाइजेशन, बाजारवाद, उत्पादक व उपभोक्ता वर्ग, बहुराष्ट्रीय कंपनियां, सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञापन, वसुधैव कुटुंबकम,जाति, धर्म, अर्थ, संप्रदाय, प्रचार-प्रसार, वैश्विक, संस्कृति, दर्शन।

प्रस्तावनाः-

भूमंडलीकरण अंग्रेजी शब्द 'ग्लोबलाइजेशन' का हिंदी रूपांतरण है। भूमंडलीकरण शब्द का अर्थ- भू- अर्थात भूमि और मंडलीकरण अर्थात- समाहित करना। भूमंडलीकरण व्यापार विषयक नियमों को वैश्विक रुप से ले जाने वाली एक प्रक्रिया है जो पूरे विश्व के लोग, कंपनी राष्ट्रो की सरकार को एक ही व्यापार में बांधने का काम करती हैं। भूमंडलीकरण उत्पाद, विचार, दृष्टिकोण तथा अन्य सांस्कृतिक आयामों का एक साझा मंच है। यह आर्थिक प्रवेश का अंतरराष्ट्रीय संजाल है।

© Copyright @ Authors

भूमंडलीकरण पूरे विश्व को एक परिवार में तब्दील करने में लगा है। पूरे विश्व को एक गांव में परिवर्तित कर 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सपने दिखा रहा है, जहां सबको बराबरी के मोहजाल में फसाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन यह भ्रम है, भूमंडलीकरण के असली चेहरे पर प्रकाश डालते हुए प्रोफेसर यशपाल जी ने लिखा है- "भूमंडलीकरण का अर्थ यह नहीं कि यह सब लोगों के लिए बराबर हैं इसमें 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसी बात बिल्कुल नहीं है। भूमंडलीकरण स्वेच्छाचारी प्रक्रिया है, जिसके नियमों का पालन हमें करना पड़ेगा और हम सबको उसके पीछे चलना पड़ेगा। ये यह भी तय करेगा कि हमारी स्थितियां कैसी होगी। उन्हें कैसे होना चाहिए।"[1]

भूमंडलीकरण का मूलभूत आश्य अर्थव्यवस्था से मुक्त होना। इसमें व्यापार संबंधी बढ़ाओ को दूर करने पूंजी पर से राज्य के नियंत्रण को हटाने तथा विदेशी विनियम से स्वच्छंद प्रसार को प्रमुखता दी जाती है। भूमंडलीकरण देश के नागरिकों को उसके मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करके अपने दायित्वों का निर्वहन करने के बजाय बाजारवाद को प्रमुखता दी है। उसने आतंकवाद और साम्प्रदायिक घृणा को वैश्विक प्रसार दिया है। उसने हमारे सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं आत्मीय बंधनों पर गहरी चोट की है। इससे मानव जीवन के पक्षों- धर्म, अर्थ, राजनीति, व्यक्ति, समाज और विचार को गहराई से प्रभावित किया है।

भूमंडलीकरण विस्तार आज के युग की ऐसी अनिवार्यता है जिसके बिना समूचा विश्व आगे नहीं बढ़ सकता। भूमंडलीकरण के समर्थन और विरोध में अलग-अलग मत है। भूमंडलीकरण के फैलाव से अनेक संकट भी पैदा हुए परंतु हमें इसके उज्जवल पक्ष की ओर भी दृष्टिपात करना चाहिए।।

भूमंडलीकरण के कारण संपूर्ण विश्व बाजार में परिणत हो गया। जहां दो वर्ग निर्मित हो गए हैं- उत्पादक और उपभोक्ता वर्ग। उत्पादक वर्ग-व्यापारी पूंजीपति लोगों का है जो उपभोक्ता वर्ग के द्वारा वस्तु का निर्माण करवाता है तथा आकर्षक रूप से बाजार में भेजता है। दूसरा उपभोक्ता वर्ग है जो बाजार की चकाचौंध से प्रभावित हो विज्ञापन की दुनिया से बुरी तरह जकड़ा हुआ है। भारत एक विकासशील देश है जहां के मध्यम वर्ग पूरी तरह प्रभावित है। बाजार में वस्तुओं से लेकर विचारों तक की खरीद-बिक्री की जा रही है। महिला साहित्यकार प्रभा खेतान इस संदर्भ में लिखी है- "कि भूमंडलीकरण जीवन के हर कोने,अस्तित्व के हर रूप का वस्तुकरण करता है।"[2] बाजारवाद के इस दौर में उपभोक्ता को बाजार की ओर खींचने का काम भाषा करती है। यही कारण है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा व्यापारियों ने हिंदी भाषा को अपनाकर व्यापार का प्रचार-प्रसार करते हैं। औपनिवेशिक युग में भी अंग्रेजों ने अपना अधिकार या साम्राज्य स्थापित करने के लिए हिंदी को अपनाया। बढ़ते बाजारवाद के कारण हिंदी-अंग्रेजी मिश्रित भाषा 'हिंग्लिश' का

© Copyright @ Authors

Academe *Journal of Education & Psychology*
Volume-13, Issue-2, Year-2023 (July-December) *Impact Factor: 5.02*
PP: 70-74 *ISSN No: 2249-040X*

प्रसार होने लगा। परंतु यह भी सत्य है कि हिंदी ने अपने दम पर अपने अस्तित्व को कायम रखा है।

भूमंडलीकरण ने हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर पहुंचने का काम किया है। जिससे इसका प्रचार-प्रसार बढ़ा और यह मीडिया, विज्ञापन, अनुवाद और संचार प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लेकिन इसके साथ ही इसने भाषा के स्वरूप में बदलाव, अंग्रेजी के प्रभाव और उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण नैतिक मूल्य के क्षरण जैसी चुनौतियां भी पैदा की है, जिन्हें हिंदी साहित्य में दर्शाया गया है। जहां उसका नया स्वरूप और सामाजिक यथार्थ चित्रित होता है।

भाषा भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं अपितु सभ्यता और संस्कृति की संवाहिका होती है। भाषा के द्वारा मनुष्य समाज से, समाज राष्ट्र से, राष्ट्र विश्व से जुड़ा हुआ है। इस संदर्भ में डॉ. मैनेजर पांडे का मानना है कि- "समाज भाषा की जन्मभूमि है और कर्म भूमि भी। समाज ही भाषा का मुख्य स्रोत है और समाज के कर्ममय जीवन में भाषा की क्रियाशील सार्थकता पायी जाती है।"[3]

हिंदी एक ऐसी क्रियाशील भाषा है जिसने अपनी महत्ता तथा अस्तित्व को कायम रखा है। वसुधैव कुटुंबकम की भावना रखने वाली हिंदी ने आज विश्व में अपना स्थान कायम कर रही है इंटरनेट और संचार क्रांति के कारण हिंदी अब भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि विश्व के कई देशों में समझी और पढ़ाई जाती है। हिंदी में रचना करने वाले अनेक प्रवासी लेखक है जो विदेशों में अपनी कलम के द्वारा हिंदी को समृद्ध किया है। इंग्लैंड, फिजी,ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, मॉरीशस, सूरीनाम आदि अनेक देशों में हिंदी लेखक अपनी रचनाओं के द्वारा साहित्य में अहम भूमिका निभाई है। डॉ रामविलास शर्मा ने न हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने के पीछे की गिरमिटिया मजदूर एवं अन्य प्रवासी लोगों को माना है। उनका मानना है कि इन्हीं लोगों ने हिंदी को विश्व भाषा बनाया है।।

आज हिंदी अनेक देशों में संचार एवं संपर्क भाषा शिक्षण संस्थान पत्र पत्रिका तथा साहित्य सृजन करने की भाषा के रूप में उपलब्धियां हासिल कर रही है। भारत के कई ऐसे विश्वविद्यालय है जहां विदेशी छात्रों के लिए हिंदी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए जा रहा है कुछ देश के छात्र अपनी भाषा के साथ हिंदी भाषा का तुलनात्मक रूप से शोध -कार्य कर रहे हैं। कई ऐसे देश है जहां के पाठ्यक्रम में हिंदी की कविता एवं कहानी को रखा गया है।।

सन 1975 में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया इन सम्मेलनों में देश-विदेश से हिंदी के विद्वानस विभिन्न विद्यालय, स्वेच्छिक हिंदी संस्थाएं एवं निजी संस्थान सम्मिलित होते हैं। भूमंडलीकरण के दौर में विश्व हिंदी सम्मेलन के द्वारा हिंदी के प्रचार प्रसार का द्वार खोला है। आज

© Copyright @ Authors

भारत के अलावा दूसरे देशों के संस्थानों में भी अनेक भाषाओं में हिंदी की कृतियों का अनुवाद किया जा रहा है।।

उपभोक्तावादी और बाजारवादी युग में सूचना प्रौद्योगिकी और मीडिया के विस्तार ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर प्रसारित किया है। टीवी चैनल इंटरनेट और मनोरंजन जगत ने हिंदी को बढ़ावा दिया है। विज्ञापन की भाषा और प्रमोशन, वीडियो की भाषा, हिंदी शुद्धतावादीयों को भले पसंद न हो परंतु उपभोक्ता वर्ग ने उसे देश भर में अपनी सक्रिय भाषा के रूप में शामिल किया है। टीवी चैनल, इंटरनेट, पत्र- पत्रिकाएं, ई-ब्लॉक आदि कई माध्यम ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को तेजी से बढ़ावा दिया है।।

सिनेमा के द्वारा भी हिंदी को वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त हुआ है। आज अनेक फिल्मकार भारत के अलावा यूरोप, अमेरिका जैसे देशों के दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्म बना रहे हैं। जिसे वहां के लोग हिंदी गीत या संवाद बोलकर हिंदी भाषा की लोकप्रियता बढ़ा दी है। 26 जनवरी 2015 में भारत दौरे पर आए अमेरिकी राष्ट्रपति इन हिंदी फिल्म का संवाद बोलकर हिंदी भाषा की गौरव को बढ़ा दिया। इस प्रकार के अनेक ऐसे उदाहरण है जिसे हिंदी को कॉफी तेजी से उपलब्धि मिली है। आजकल हजारों की संख्या में विदेशी पर्यटक भारतीय संस्कृति और दर्शन की ओर आकृष्ट होकर उसको जानने की इच्छा कर रखते हैं।

भूमंडलीकरण के प्रभाव जैसे उपभोक्तावाद, शहरीकरण, मानवीय मूल्यों में बदलाव को हिंदी साहित्य (कविता, कहानी, उपन्यास) में प्रमुखता से चित्रित किया गया है। भूमंडलीकरण के कारण भौतिक साधनों का पाबल्य, आर्थिक संपन्निता, सुविधाओं की भरमार वैश्विक मूल्यों की स्थापना, अधिकारों के प्रति सचेतता, रोजगार निर्मिती एवं वैश्विक दूरियों को मिटाने में सहजता आई है तो दूसरी ओर मनुष्य को स्वार्थी, विकृत, संकुचित, क्रूर एवं पशु बना दिया है। मानव और समाज की इस बदलती मानसिकता को साहित्य में चित्रित किया गया है। दया, प्रेम, समर्पण, बंधुता, सत्य एवं अहिंसा जैसे मूल्य टूट गए हैं और अर्थ केंद्रित मानसिकता परनपने लगी है। समाज और मानव के बदलते मूल्य तथा विकृत घृणित एवं संकुचित मानसिकता को हिंदी साहित्य में बखूबी से चित्रित किया गया है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी अब खतरे में है। आजकल के लोग हिंदी के बजाय अंग्रेजी को बढ़ावा देने लगे हैं। आज अभिभावकों में बच्चों को आरंभ से अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा दिलवाने की होर लगी हुई हैं। वे अपने बच्चों के द्वारा अंग्रेजी बोलना और पढ़ना पसंद करते हैं। दिन-प्रतिदिन अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की संख्या बढ़ रही है। गांव में भी अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोले जा रहे हैं। कई देशों में तो अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य भाषा के रूप में दर्जा मिला है।

© Copyright @ Authors

भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी भाषा को जीवित रखना है तो सबसे पहले हमें अपनी मानसिकता को सुधारना होगा। हमें अपने बच्चों को हिंदी भाषा के प्रति आकर्षित करना होगा। अंग्रेजी बोलना या पढ़ना कोई गलत नहीं है परंतु उस होर में हमें अपनी मातृभाषा का भी ख्याल रखना है और साथ हिंदी भाषा को लाभ के सिद्धांत तक सीमित न रखते हुए उसे सरल एवं लचीली बनाने की आवश्यकता है।

इस प्रकार हिंदी अपनी शक्ति और ऊर्जा तथा सूचना प्रौद्योगिकी से उपलब्ध नये यांत्रिक उपकरणों के साथ अपना साम्राज्य स्थापित करते हुए विश्व मंच पर भारत का गौरव बढ़ा रही है। विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, कंप्यूटरीकरण, व्यावसायिक क्षेत्र, विज्ञापन आदि क्षेत्रों में हिंदी भाषा का विकास तेजी से हो रहा है। फालत: वैश्विक गांव की जो परिकल्पना साकार होती प्रतीत हो रही है। परंतु हमें यहां सतर्क रहना आवश्यक है कि हमें हिंदी भाषा के विकास में आने वाली संकटों के लिए तैयार रहना है। हम अपने नैतिक मूल्यों,संस्कृति तथा संस्कारो से ना कटे क्योंकि यही हमारी जड़ है, और जुड़ से कटना पतन की ओर ले जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. रोशन कुमार,भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास पृष्ठ संख्या 63
2. प्रभात खेतान, बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ संख्या 32
3. शशि भूषण कुमार शशि, (संपा.) भूमंडलीकरण: साहित्य, समाज और संस्कृति, एक्सेस बुक प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ संख्या 297

© Copyright @ Authors